International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-7, Issue-6 December- 2020
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

छायावादी कविताओं में प्रगतिशील मूल्यों के वर्गीकरण पर अध्ययन

Mimlesh
Research Scholar
Deptt. of Hindi
Malvanchal University
Indore (M.P.)

Dr. Shobha Ratrudi
Research Supervisor
Deptt. of Hindi
Malvanchal University
Indore (M.P.)

सार

"राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर ने 'आधुनिक बोध' में आधुनिकता के बारे में कहा है– "जिसे हम आधुनिकता कहते हैं, वह एक प्रक्रिया है।" हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री गिरिराज किशोर ने आधुनिकता के बारे में कहा है– "आधुनिकता वही होती है जो वर्तमान को स्वीकार करे और उसके अनुरूप रूढ़ियों में परिवर्तन लाए।" आधुनिकता को हमें विचारों से जोड़ना चाहिए तभी हम आधुनिक हो सकेंगे अन्यथा हम लोग आधुनिक न होकर उच्छृंखल हो जाएंगे।

डॉ. भैरूलाल गर्ग ने 'आज की हिंदी कहानी' में आधुनिकता के बारे में कहा है– "आधुनिकता की कसौटी मात्र बाह्य परिवर्तन ही नहीं है अपितु जीवन मूल्य, विचारधाराएँ, दृष्टिकोण और जीवनानुभव हैं जो कि बहुत कुछ आंतरिकता से संबंध रखती है।" डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी आधुनिकता को गतिशीलता मानते हुए कहते हैं कि बुद्धिमान आदमी एक पैर से खड़ा है दूसरे पैर से चलता है, यह खड़ा पैर परंपरा, चलता पैर आधुनिकता है। डॉ. इंद्रनाथ मदान के अनुसार– "यह एक प्रक्रिया है, जिसे वाद के साँचे में ढाल कर जड़ बनाने की कोशिश नाकाम सिद्ध होती रही है, गति को स्थिति का रूप देने में असफलता का मुँह ताकना पड़ा है, आधुनिकता स्थिति को तोड़कर गति में जारी होती रही है।" विपिन अग्रवाल ने 'आधुनिकता के पहलू' में कहा है– "आधुनिकता वास्तव में एक अर्द्ध विकसित प्रक्रिया है जिसकी कोई स्थूल, पूर्वनिश्चित और अपरिवर्तनीय दिशा नहीं है। मनुष्य और उसकी अर्द्ध विकसित अथवा अल्प विकसित क्रियाएँ आधुनिकता को परिभाषित करती हैं, जो जितना आधुनिक है वह उतना ही मनुष्य है।" डॉ. कुमार विमल 'अत्याधुनिक हिंदी साहित्य' में लिखते हैं– "आज की स्थिति का यथार्थ परिज्ञान ही आधुनिकता का आधार है।"

मुख्य शब्दः– आधुनिकता, विकसित और गतिशील।

प्रस्तावना

निराला के व्यक्तित्व और कर्तत्व पर विचार करने वाले हिन्दी आलोचकों में सर्वश्री रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे बाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह और बच्चन सिंह, रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा रामविलास शर्मा के नाम प्रमुख हैं। शुक्ल जी ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में, बाजपेई जी ने 'कवि निराला' में, द्विवेदी जी ने 'हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास' में, नामवर सिंह जी ने अपने ग्रंथ 'छायावाद' में, बच्चनसिंह जी ने 'क्रांतिकारी कवि निराला' में चतुर्वेदी जी ने अपने 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' में इनके काव्य का मूल्यांकन किया है।

इनमें निराला नामयुक्त कृतियाँ तो स्पष्ट ही है कि इनकी महानता को सिद्ध करने के लिये लिखी गई हैं। बाकी लोगों में से एक शुक्ल जी को छोड़कर अन्य ने भी निराला की काव्य प्रतिभा का बहुत ऊँचा मूल्यांकन किया है। शुक्ल जी के बारे में कहा जा सकता है कि इन्होंने अपनी आलोचना में निराला की कविता का सम्यक् मूल्यांकन किया है और उनके गुण–दोष दोनों को दिखाने का प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास के विद्यार्थी जानते हैं कि इनके व्यक्तिगत संबंध बहुत अच्छे नहीं थे। लेकिन फिर भी आचार्य शुक्ल ने यथा संभव वस्तुनिष्ठता का निर्वाह करते हुये बाह्य प्रतिमानों और अंतः साक्ष्यों के संतुलित प्रयोग के आधार पर अपना निर्णय देने का प्रयास किया है। छात्रगण ध्यान दें कि एक नंददुलारे बाजपेयी को छोड़कर बाकी लोगों के निराला संबंधी विचार प्रसंगवश यत्र–तत्र पूर्व की इकाइयों में आ चुके हैं। लेकिन चूँकि यह प्रकरण विशेष रूप से इसी विषय पर केन्द्रित है अतः पुनरावृत्ति से भरसक बचते हुये इन विद्वानों के विचारों को सामने रखने का काम किया जाएगा।

"संगीत को काव्य के और काव्य को संगीत के अधिक निकट लाने का सबसे अधिक प्रयास निराला जी ने किया है।" "गीतिका में इनके ऐसे ही गीतों का संग्रह है जिनमें कवि का ध्यान संगीत की ओर अधिक है। अर्थ समन्वय की ओर कम।"

छायावाद : युग–संदर्भ राष्ट्रीय चेतना

1916 से 1936 तक बीस वर्षों का समय छायावाद युग है। दो महायुद्धों के बीच की हिंदी कविता के रूप में भी छायावाद का अध्ययन किया जा सकता है। लेकिन छायावाद का मूल उत्स भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में है। स्वाधीनता की चेतना का ही परिणाम है– कल्पना पर अधिक बल। यह तथ्य ध्यान आकृष्ट करने वाला है कि हिंदी कविता में छायावाद और भारतीय राजनीतिक मंच पर महात्मा गांधी का आगमन लगभग एक ही साथ हुआ था। इसी स्थिति ने डॉ0 नगेन्द्र जैसे आलोचक को यह कहने का आधार प्रस्तुत किया होगा कि 'जिन परिस्थितियों ने हमारे दर्शन और कर्म को अंहिसा की ओर प्रेरित किया, उन्होंने ही भाव (सौंदर्य) वृत्ति को छायावाद की ओर।' इसका यह अर्थ नहीं है कि छायावाद और गांधी जी की जीवन दृष्टि समान है या स्वाधीनता संघर्ष में जो भूमिका गांधी की थी, वही छायावाद की हिंदी काव्य के संदर्भ में है। लेकिन स्वाधीनता के संदर्भ में छायावाद और गांधी– दोनों की परिकल्पना उस दौर में लगभग एक समान कही जा सकती है।

जयशंकर प्रसाद का आधुनिक बोध और संवेदना :

जयशंकर प्रसाद आधुनिक बोध और संवेदना के कवि हैं। छायावादी कवियों के आधुनिकता बोध में वैयक्तिक चेतना के साथ नयी सौदर्य चेतना, नयी प्रेम चेतना, नयी नैतिक चेतना का संश्लिष्ट रूप देखा जा सकता है। डॉ0 देवराज, जिन्होंने कभी 'छायावाद का पतन' नाम की विचारोत्तेजक पुस्तक लिखी थी, मानते हैं कि छायावाद अनाधुनिक पौराणिक–धार्मिक चेतना के विरूद्ध आधुनिक लौकिक चेतना का विद्रोह था। इस प्रकार छायावाद में लौकिक मानवीय संस्पर्श वाली कविता का अनादर नहीं है। यह जरूर है कि कई बार छायावादी कवियों के यहाँ लौकिक–मानवीय अनुभव पर अस्पष्टता का पर्दा पड़ा रहा है। जैसा प्रसाद की कृति 'आँसू' में देखा गया, या 'लहर' की कई कविताओं में।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

संबंधित साहित्य की समीक्षा के माध्यम से, शोधकर्ता अच्छी तरह से स्थापित निष्कर्षों के अनजाने दोहराव से बच सकता है। किसी अध्ययन को दोहराने का कोई फायदा नहीं है जब उसके परिणामों की स्थिरता और वैधता स्पष्ट रूप से स्थापित हो गई हो। शैक्षिक अनुसंधान के संचालन में सर्वेक्षण या संबंधित साहित्य एक महत्वपूर्ण कदम है। यह अन्वेषक को अंतराल का पता लगाने और किसी विशेष

क्षेत्र में अनुसंधान में रुझान खोजने में सक्षम बनाता है। अन्य अन्वेषक द्वारा नियोजित डिजाइनों, नमूनों और अनुसंधान उपकरणों के बारे में जानकारी, भविष्य के जांचकर्ताओं को उनकी प्रक्रिया को अधिक सावधानी से तैयार करने में मदद करती है। यह डेटा की तुलना करने में सक्षम बनाता है, जिसके आधार पर एक शोधकर्ता निष्कर्षों के महत्व का मूल्यांकन और व्याख्या कर सकता है। यहाँ प्रासंगिक साहित्य प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, जिसका इस अध्ययन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ने की संभावना है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा के लाभों को ध्यान में रखते हुए, अन्वेषक ने सभी उपलब्ध सामग्रियों को व्यापक रूप से पढ़ा। अध्ययन के तहत क्षेत्र से संबंधित प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए एक गंभीर प्रयास किया जाता है। अन्वेषक ने अपने शोध के क्षेत्र से संबंधित अध्ययनों और लेखों के माध्यम से यह पता लगाया कि क्या किया गया है, क्या किया जाना बाकी है और पूर्व शोधकर्ताओं के साथ कारकों की उसकी व्याख्या की तुलना करने के लिए।

शोधकर्ता ने कुछ प्रमुख शोध अध्ययन एकत्र किए जो भारत और विदेशों में किए गए हैं। इस प्रक्रिया में, शैक्षिक अनुसंधान के सर्वेक्षणों से बहुत मदद मिली, लेकिन वर्तमान ज्ञान से परिचित कराने के लिए अन्य स्रोतों जैसे पत्रिकाओं, पुस्तकों, विश्वकोशों, लेखों, निबंधों, थीसिस और वेब साइटों से बड़े पैमाने पर परामर्श किया गया।

छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. प्रकृति चित्रण

छायावादी काव्य में प्रकृति के सर्वाधिक आकर्षक लौकिक तथा अलौकिक रूपों का चित्रण किया गया है। इस धारा के समस्त कवि प्रकृति के पुजारी हैं। पंत, प्रसाद, निराला, दिनकर आदि ने प्रकृति को परम रूपसी नारी के रूप में चित्रित किया है।

इस काव्यधारा के कवियों के प्रकृति चित्राण में कहीं भी वासनात्मक और ऐन्द्रिक चित्राण नहीं है। विषाद और दुख में भी आदर्श चित्राण दृष्टिगोचर होता है। छायावादी काव्य का प्रत्येक चित्रा विस्मय कार्य है। प्रकृति का रहस्यात्मक रूप मन को बांध लेने वाला होता है।

2. व्यक्तिवाद की प्रधानता

द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मक विचारधारा के कारण छायावाद में व्यक्तिवादी भाव उभर आया है। इस काव्यधारा में जहाँ आध्यात्मिक पक्ष सामने आया है वहीं व्यक्तिवादी भाव भी उभरा है। हिन्दी कविता जाति विशेष के सुख दुख तक ही सीमित न रहकर समस्त मानव के सुख दुख की कहानी बन गई है। इस काव्यधारा का कवि विभिन्न समस्याओं और बाधाओं के समाधान को बाह्य जगत में न खोजकर मानव मन में खोजता है।

3. रहस्यानुभूति और देश प्रेम

छायावादी काव्य में रहस्यात्मक भावना का प्रबल रूप है। इसमें राष्ट्रीय जागरण के साथ रहस्यात्मक भाव का विलक्षण योग दिखाई देता है। इसी राष्ट्रीय जागरण भाव ने छायावाद को असामाजिक पदों पर भटकने से बचा लिया है। छायावादी कवि अलौकिक आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति में युगीन सन्दर्भों को देखता चलता है। यह छायावादी काव्य की आदर्श प्रवृत्ति है।

प्रगतिशील जीवन मूल्य

प्रगतिशील साहित्यिक मूल्य प्रगतिशील जीवन मूल्यों की ही सृजनात्मक अभिव्यक्ति हैं। अतः दूसरे को समझने के लिये पहले को समझना अत्यावश्यक है। कुछ लोग 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' या 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की मानवतावादी भावना को प्रगतिशील मानते हैं। लेकिन इस विशेष संदर्भ में इसका विशेष तात्पर्य है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में यह इस प्रकार है–

"प्रगतिवादी साहित्य मार्क्स के प्रचारित तत्वदर्शन पर आधारित है। इस विचारधारा के अनुसार

1. संसार का स्वरूप भौतिक है, वह किसी चेतन सर्व समर्थ सत्ता का विवर्त या परिणाम नहीं है।

2. उसकी प्रत्येक अवस्था की व्याख्या की जा सकती है। कुछ भी अज्ञेय या अचिन्त्य नहीं है, कुछ भी रहस्य या उलझनदार नहीं है। इस मत को माननेवाला साहित्य रहस्यवाद में विश्वास नहीं कर सकता।
3. इस मत में समाज निरंतर विकसनशील संस्था है। आर्थिक विधानों के परिवर्तन के साथ–साथ समाज में भी परिवर्तन होता है। इस मत को स्वीकार करने वाला साहित्य समाज की रूढ़ियों को सनातन से आया हुआ, शासक या ईश्वर की निभ्रांत आज्ञाओं पर बना हुआ और उच्च–नीच मर्यादा को सनातन विधान नहीं मान सकता।"

इस प्रकार प्रगतिवादी साहित्यक समाज की किसी व्यवस्था को सनातन नहीं मानता, किसी भी वस्तु को रहस्य या अज्ञेय नहीं समझता तथा किसी अज्ञेय–अलक्ष्य चिरंतन प्रियतम की लीला को साहित्य का लक्ष्य नहीं मानता वह समाज को बदल देने में विश्वास करता है। उसका विश्वास है कि मनुष्य प्रयत्न करके इस समाज को ऐसा बना सकता है।

प्रगतिशीलता की व्यावहारिक व्याख्या

लेकिन, जैसा कि पहले ही कहा गया है कि यह प्रगतिशीलता की ऑर्थोडॉक्स व्याख्या है। व्यवहार में इसका मतलब वही होता है जो आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निराला के काव्य का विवेचन करते हुये एक पंक्ति में व्यक्त किया है। अपनी कृति हिन्दी साहित्य का इतिहास में निराला की 'तोड़ती पत्थर' कविता की आरंभिक पंक्ति को उद्धृत करते हुये वे लिखते हैं–"....श्रमजीवियों के कष्टों की सहानुभूति लिये हुये जो लोकहितवाद का आंदोलन चला है उस पर भी निराला जी की दृष्टि गई है।"

यह प्रगतिशीलता की व्यावहारिक परिभाषा है और आगे चलकर देखा गया कि यह बहुत हद तक सही ठहरी। इसी परिभाषा के अनुसार बाद में स्वयं शुक्ल जी प्रगतिवादियों के पूज्य हुये। हजारी प्रसाद द्विवेदी उनके श्रद्धेय हुये। दिनकर जी को अपना माना गया और निराला जी को अपना पूर्व पुरुष कहा गया। इसी व्यावहारिक परिभाषा के अनुसार बौद्ध नागार्जुन प्रगतिशील हुये, त्रिलोचन और केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी माने गये। सो 'श्रमजीवियों के कष्टों की सहानुभूति लिये हुये लोकहितवाद'–प्रगतिशीलता का मूलमंत्र हुआ।

डॉ. नामवर सिंह के अनुसार "..... प्रगतिशील आन्दोलन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने मुख्यतः किसानों–मजूरों और कुछ निम्न मध्यमवर्ग के पढ़े–लिखे युवकों में से नवीन भावनाओं वाले कवि तथा लेखक निकाले। मध्यवर्ग से उगने वाली इस पौध के विशेष लेखकों और कवियों में राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, वासुदेव सिंह त्रिलोचन, शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामविलास शर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, राधाकृष्ण, भवानी प्रसाद मिश्र, रांगेय राघव, चन्द्रकुँवर वर्त्वाल, चंद्रकिरण सौनरिक्सा, अमृत राय, तेज बहादुर चौधरी, भीष्म साहनी, भैरव प्रसाद गुप्त, राजेन्द्र यादव, केदारनाथ सिंह, रामदरश मिश्र, मार्कंडेय वगैरह के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रगतिशील मूल्यों का वर्गीकरण

प्रगतिशील मूल्यों के वर्गीकरण के कुछ और प्रयास भी किये गये हैं। इनका परिचय छात्रों को कराते हुये हम इस प्रकरण को आगे बढ़ाएँगे।

1. प्रगतिशीलता जीवन के प्रति एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सामने रखती है।
2. यह अर्थ यानी धन को ही तमाम विषमताओं की जड़ मानकर इसके समान वितरण पर बल देती है।
3. प्रगतिशील भौतिकवादी होता है। वह ईश्वर या आत्मा की सत्ता को नहीं मानता है।
4. उसका उद्देश्य पूँजीवादी, सामंतवादी सहित तमाम प्रतिक्रियावादी तत्वों द्वारा पोषित सामाजिक, राजनैतिक, नैतिक, धार्मिक और साहित्यिक रूढ़ियों का विरोध करना है।
5. कला को वह साध्य नहीं बल्कि अभिव्यक्ति का साधन मात्र मानता है और उसे सर्वसाधारण की समझ के अनुकूल बनाने पर बल देता है।
6. वह साहित्य में और जीवन में भी व्यक्ति के ऊपर समाज की सत्ता का अंकुश चाहता है।

इनको समेकित करने पर हमें निम्नलिखित विशेषताएँ प्राप्त होती हैं जिनके आधार पर इस वाद विशेष का आंदोलन चलाया गया–

1. रूढ़ियों का विरोध
2. शोषकों के प्रति आक्रोश

3. शोषितों के प्रति सहानुभूति
4. क्रांति की भावना
5. सोवियत रूस की समाजवादी व्यवस्था को आदर्श मानना
6. अर्थ या पूँजी की उत्पत्ति का कारण श्रम को मानना आदि।

उपसंहार

जिस प्रकार राष्ट्रीयता की भावना या भारतीय जीवन मूल्य किसी दल विशेष की चौअनियाँ मेम्बरशिप के मोहताज नहीं हैं उसी प्रकार प्रगतिशील जीवन मूल्य भी इस आँदोलन या संगठन के सदस्य कवियों से इतर कवियों की कविताओं में भी दृष्टिगत होते हैं।

इनमें सर्वप्रमुख हैं रामधारी सिंह 'दिनकर'। दिनकर स्वतंत्रता पूर्व के विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुये और स्वतंत्रतापूर्व के बाद राष्ट्रकवि के नाम से जाने जाते रहे। ये छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी से थे। एक ओर उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल श्रृँगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति भी है।

दिनकर के लगभग दो दर्जन काव्य संकलन प्रकाशित हैं जिनमें प्रगतिशील चेतना की दृष्टि से हुंकार, द्वन्द्वगीत, कुरुक्षेत्र, इतिहास के आँसू, रश्मिरथी, दिल्ली, परशुराम की प्रतीक्षा और कोयला और कवित्व तथा 'मृत्ति तिलक' शामिल हैं।

दिनकर जी 1929 से 1974 तक लगभग चार दशकों तक रचनाशील रहे और छायावाद, प्रगतिवाद तथा नई कविता आंदोलन के दौरान भी सक्रिय रहे। वैसे तो ये स्वच्छंद धारा के कवि माने जाते हैं लेकिन यदि किसी वाद विशेष का इनपर सबसे ज्यादा प्रभाव था तो वह प्रगतिवाद है। दिनकर जिस क्षेत्र से आते थे वह पूरा इलाका परम्परा से साम्यवादी आंदोलन के प्रभाव में रहा है। उनके गाँव और उसके आसपास के क्षेत्र को कभी 'बिहार का मॉस्को' कहा जाता था। बिहार विधान सभा में चुनकर आने वाले पहले साम्यवादी विधायक श्री चंद्रशेखर सिंह इनके पड़ोस के गाँव के थे। इस प्रकार दिनकर की कविता में प्रगतिशील मूल्यों की उपस्थिति होना कोई आकस्मिक बात नहीं है।

संदर्भ

1. नदी के द्वीप, अज्ञेय, पृ० 25
2. आत्मनेपद, अज्ञेय, पृ० 42
3. कला का जोखिम, निमंल वर्मा, पृ० 80
4. आत्मनेपद, मज्ञेय, अन्तिम पृष्ठ
5. दस्तावेज, सं ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी, पृ० 23
6. आत्मपरक, अज्ञेय, पृ० 369
7. धार ओर किनारे, अज्ञेय, पृ० ,48
8. साहित्य और समाज परिवतंन की प्रक्रिया, अज्ञेय, पृ० 92
9. धार और किनारे, बन्ज्ञेय, पृ० 36
10. साहित्य गौर समाज परिवतंन की प्रक्रिया, अज्ञेय, पृ० 90
11. घार ओर किनारे, अज्ञेय, पृ० 53
12. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, डॉ० जगदीश चतुर्वेदी, पृ० 63
13. आत्मपरक, अज्ञेय
14. आत्मनेपद, बज्ञेय, 32
15. आत्मनेपद, अज्ञेय, पृ० 46
16. सामाजिक यथार्थ और कथा भाषा, अज्ञेय, पृ० 27. शाश्वती, अज्ञेय, 23
17. आत्मपरक, अज्ञेय, पृ० 378
18. आत्मनेपद, अज्ञेय, पु० 44
19. दस्तावेज, सं० विश्वनाथप्रसाद तिवारी, पृ० 43
20. दस्तावेज, सं० दिश्वनाथप्रसाद तिवारी, पृ० 46
21. त्रिशंकु, अज्ञेय, 27
22. आत्मपरक, अज्ञेय, पु० 55